I J C R M
International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

रानी दमयंती पुरातत्त्व संग्रहालय (दमोह) में प्रदर्शित विष्णु एवं उनकी अवतार प्रतिमाएँ : विवेचनात्मक अध्ययन

आनन्द कुमार जायसवाल
शोधार्थी, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

Corresponding Author: * आनन्द कुमार जायसवाल

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17515667

सारांश

वर्तमान शोधपत्र में मध्यप्रदेश के दमोह जिले स्थित रानी दमयंती पुरातत्त्व संग्रहालय में संग्रहीत विष्णु एवं उनके विभिन्न आवृत्त रूपों की प्रतिमाओं का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि संग्रहालय में प्रदर्शित मूर्तियाँ मध्यकालीन शिल्पकला का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं, जिनमें धार्मिक, सांस्कृतिक एवं कलात्मक भावों का अद्भुत संगम दृष्टिगोचर होता है। इन प्रतिमाओं में विष्णु के विविध अवतार जैसे वराह, नृसिंह, वामन तथा अन्य स्वरूपों का सजीव अंकन प्राप्त होता है। इनके निर्माण की शैली, मुद्रा, अलंकरण तथा शिल्पगत विशेषताओं से यह प्रतीत होता है कि ये प्रतिमाएँ न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि भारतीय मूर्तिकला के विकास क्रम को समझने में भी सहायक हैं। इस शोध में प्रतिमाओं के स्थापत्य, मूर्तिकला–शैली तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, जिससे क्षेत्रीय पुरातात्त्विक धरोहर के संरक्षण एवं अध्ययन को नई दिशा प्राप्त होती है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 13-09-2025
- **Accepted:** 23-10-2025
- **Published:** 31-10-2025
- **IJCRM:**4(5); 2025: 562-565
- **©2025, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

आनन्द कुमार जायसवाल. रानी दमयंती पुरातत्त्व संग्रहालय (दमोह) में प्रदर्शित विष्णु एवं उनकी अवतार प्रतिमाएँ : विवेचनात्मक अध्ययन. Int J Contemp Res Multidiscip. 2025;4(5):562-565.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्दः विष्णु प्रतिमा, नृसिंह, वराह, वामन, पुरातत्त्व, शिल्पकला, दमोह, मध्यप्रदेश, रानी दमयंती पुरातत्त्व संग्रहालय

© 2025 आनन्द कुमार जायसवाल. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

भारत के मध्यवर्ती भाग बुन्दलेखण्ड के प्रत्येक भू–भाग में पुरातात्त्विक साक्ष्य विभिन्न संग्रहालयों के रूप में सुव्यवस्थित एवं कई जगह बिखरे पड़े हुए है, जो आज भी अपनी संस्कृति को संजोये रखे हुए हैं। इसी प्रकार के कुछ पुरातात्त्विक अवशेष बुन्देलखण्ड के दमोह जिले में भी अनेक स्थानों से प्राप्त हुए, जिसमें दमोह जिला का ''रानी दमयंती पुरातत्त्व संग्रहालय'' भी अपनी विशेष भूमिका रखता है। [1] जिसमें विभिन्न धर्मों से संबंधित पुरातात्त्विक साक्ष्यों का संग्रह एवं प्रदर्शन किया गया है, जिसमें दमोह जिले के आसपास से प्राप्त प्रतिमाएं संरक्षित की गई है। हिन्दू देवी–देवताओं की प्रतिमाओं के स्तंभ, सिरदल आदि के साथ–साथ बौद्ध एवं जैन धर्म से संबंधित विभिन्न प्रतिमाएं प्रदर्शित है।

दमोह का भौगोलिक स्थिति

मध्य प्रदेश के सागर संभाग में दमोह जिला स्थित है, जिसकी भौगोलिक पृष्ठभूमि $23^{o}83'11''$ उत्तरी अक्षांश और $79^{o}44'21''$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। [2] दमोह जिले के दक्षिणी भाग से कर्क रेखा भी गुजरती है। इसके पूर्व दिशा में जबलपुर, पश्चिम में सागर, उत्तर दिशा में छतरपुर एवं दक्षिण में नरसिंहपुर जिलें स्थित है। दमोह जिले के दमोह नगर मुख्यालय में रानी दमयंती पुरातत्त्व संग्रहालय स्थित है, जो एक मध्यकालीन गढी में अवस्थित है।

दमोह क्षेत्र – पर विभिन्न राजवंशों ने राज्य किया जिसमें एक नरवर के राजा नल की भी विशेष जनश्रुति प्राप्त होती है। रानी दमयंती राजा नल की पत्नि थी, राजा नल कुछ समय के लिए रनैह में रहे हैं, दमोह जिले के पास का ही हिस्सा था। जिसके प्रमाण यहाँ से प्राप्त होते हैं अर्थात् रानी दमयंती इस क्षेत्र में राज्य करती थीं। इस कारण इस क्षेत्र का नाम दमकनपुर या दमयंतीपुर प्राप्त होता है जिसे आज वर्तमान में दमोह के नाम से जाना जाता है। इस महान विभूति के नाम को याद रखने के लिए दमोह का नामकरण राजा नल की पत्नि रानी दमयंती के नाम पर रखा गया है। जिसकी स्थापना रानी दमयंती के द्वारा की गई थी। [3]

संग्रहालय – रानी दमयंती पुरातत्त्व संग्रहालय की स्थापना जिस मध्यकालीन गढी में की गई है, उसे 1480 ई. के लगभग मुहम्मद बिन तुगलक के समय निर्मित किया गया था, जो कि गढी के रूप में निर्मित की गयी थी। उस समय इस क्षेत्र की नायब नामक एक अधिकारी सुरक्षा व्यवस्था देखता था जो नायब के मुख्यालय के नाम से जाना जाता था। इस गढी की दीवार पर 1480 ई. का शिलालेख भी प्राप्त होता है।

इस गढी में भारतीय पुरातत्त्व विभाग द्वारा एक संग्रहालय की स्थापना कर दी गई जिसका नामकरण रानी दमयंती के नाम पर 'रानी दमयंती पुरातत्त्व संग्रहालय' किया गया। इस संग्रहालय की स्थापना का श्रेय तत्कालीन गवर्नर सरला ग्रेवाल जी को जाता है। जिनकी अवधारणा के फलस्वरूप 25 अगस्त 1989 को इसे संग्रहालय का स्वरूप प्रदान किया। तब सम्पूर्ण दमोह जिले के आसपास की जितनी बिखरी हुई प्रतिमाएँ थीं, उन सभी को एकत्रित करके यहाँ संरक्षित एवं प्रदर्शित किया गया। जिनमें शैव, वैष्णव, शाक्त, गौण, देवी–देवताओं के साथ बौद्ध एवं जैन प्रतिमाओं का प्रदर्शन किया गया है। इस संग्रहालय में अधिकांश प्रतिमाएं दौनी, अलोनी, नामक ग्राम से प्राप्त हुई हैं। इसके अलावा सिंगरामपुर, मोहड़, झरौली, खारी–देवरी एवं इसके आसपास के क्षेत्र से भी प्रतिमाएं, मूर्तिया एवं अन्य पुरावशेष प्राप्त हुऐ हैं। जिससे दमोह जिले की पुरातात्त्विक संस्कृतिक जानकारी प्राप्त होती है। रानी दमयंती पुरातत्त्व संग्रहालय में प्रदर्शित विष्णु प्रतिमाएँ अपना विशेष महत्व रखती है।

इस संग्रहालय में स्थापित मंदिर स्थापत्य के विभिन्न भागों (जिनमें सिरदल, स्तम्भ, द्वारशाखा, मुख्य प्रतिमा आदि) में विष्णु की प्रतिमाएं प्रदर्शित की गई हैं। [4] इसके अलावा विष्णु की स्वतंत्र एवं उनकी अवतार प्रतिमाएं भी प्रदर्शित की गई हैं। जिनका उल्लेख निम्नलिखित है :–

नृसिंह प्रतिमा

भगवान विष्णु ने भक्त प्रहलाद तथा इसके पिता हिरण्यकशिक्षु का वध करने के लिए अपना चौथा नृसिंह अवतार धारण किया, जिसमें विष्णु का शरीर मानव तथा मुख सिंह का होता है। मत्स्यपुराण, रूमण्डन, बैखानसआगम् एवं प्रतिमा विज्ञान में नृसिंह अवतार के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। [5] विविध ग्रन्थों में वर्णित है कि चतुर्भुजी विष्णु की चक्र, नीलोत्पन्न, गदा एवं शंख रखने चाहिए। इनकी तीन रूपों (गिरिज, नृसिंह, स्थौण–नृसिंह, यानक नृसिंह) में प्रतिमा बनाने का ग्रन्थों में वर्णन दिया गया है। [6]

प्रतिमा का नामः नृसिंह
प्राप्ति स्थलः दौनी (दमोह)
प्रदर्शन स्थलः रानी दमयंती पुरातत्त्व संग्रहालय, दमोह
पंजीयन संख्याः192
मापः 45×54×29 से.मी.
प्रस्तरः लाल बलुआ
कालः 10–11वीं शताब्दी ईस्वी (कलचुरि काल)

छायाचित्र क्र. 1: नृसिंह प्रतिमा

विवेच्य प्रतिमा रानी दमयंती पुरातत्त्व संग्रहालय में प्रदर्शित किया गया है। यह एक खण्डित स्तम्भ खण्ड पर भगवान विष्णु के चतुर्भुजी नृसिंह रूप की एक प्रतिमा प्रदर्शित है। जिसमें भगवान विष्णु के नृसिंह अवतार में हिरण्यकशिपु का वध करते हुए प्रदर्शित किये गये है। यह प्रतिमा स्थानक एवं अतीढ़ मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। प्रतिमा को दो स्तम्भों के मध्य में प्रदर्शित किया गया है जिसमें बायें तरफ का स्तम्भ खण्डित हो गया है तथा दायी तरफ के स्तम्भ में दो अलंकरण को उत्कीर्ण किया गया हैं। नृसिंह प्रतिमा के मस्तक पर जुडा, कानों में कुण्डल, गले में हार, हाथों में कंकण केयूर व हस्त वलय, पौरों में नूपुर, लम्बी वर्णमाला परिलक्षित है। प्रतिमा के दाई ओर गजशार्दुल व अश्वशार्दुल का अलंकरण किया गया है शेष दाहिने तरफ का स्तम्भ का भाग खण्डित अवस्था में है। ये प्रतिमा प्रतिमाशस्त्रीय लक्षणों पर आधारित है।

वामन अवतार

वैदिक काल में भगवान विष्णु के पांचवे अवतार वामन के बारे में जानकारी प्राप्त होता है। भगवान विष्णु ने राजा बलि का गर्व को चूर्ण करने के लिये वामन अवतार लिया और अपने तीन पगों से सम्पूर्ण पृथ्वी को नाप लिया इसलिये वह 'त्रिविक्रम' कहलाये। [7] शिल्पसंहिता एंव रूपमंण्डन से वामन प्रतिमाओं के निर्माण सम्बन्धी विवरण मिलता हैं। शिल्परत्न के अनुसार –

त्रिविक्रमं वक्ष्ये वामपादेन मेदीनीम ।
आक्रामन्तं द्वितीयेन साकल्येन नभस्थलम ।।
शिल्परत्न 25/18

विवरणों के आधार पर विविध अलंकरणों से युक्त वामन वरद – मुद्रा में अपनी भुजाओं में शंख, चक्र, एवं गदा धारण किये हुए रहते है। प्रतिमा विज्ञान में वामन अवतार की प्रतिमाएँ दो रूपों में निर्मित होती हैं, प्रथम रूप ब्रह्मचारी द्वितीय रूप त्रिविक्रम है।[8] रूपमण्डन[9] के अनुसार छोटे कद वालो मोटे शरीर से युक्त श्यामवर्णी वामन यज्ञोपवीत एवं दण्ड धारण किये हो। वामन रूप में विष्णु की प्रतिमाए वर्तमान में मथुरा संग्रहालय में दृष्टव्य हैं।[10] वामन अवतार की प्रतिमाओं के विविध उदाहरण – महाबलिपुरम[11], खजुराहों[12] एवं एरण[13] से देखने को मिलते हैं।

प्रतिमा का नामः वामन/त्रिविक्रम
प्राप्ति स्थानः दौनी (दमोह)
प्रदर्शन स्थलः रानी दमयंती पुरातत्व संग्रहालय, दमोह
पंजी. संख्याः 162

© 2025 आनन्द कुमार जायसवाल. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तरः लाल बलुआ
मापः 45×92×33 से.मी.
कालः 10–11वीं शताब्दी ईस्वी (कलचुरि काल)

छायाचित्र क्र. 2: वामन/त्रिविक्रम

विष्णु के त्रिविक्रम वामन अवतार की प्रतिमा दौनी पुरास्थल से प्राप्त है, जिसे लाल बलुवा प्रस्तर फलक पर उकेर कर निर्मित किया गया है। यह प्रतिमा रानी दमयंती पुरातत्त्व संग्रहालय, दमोह संग्रहित है। चतुर्भुजी प्रतिमा त्रिरथ पादपीठ पर आलीढ़ मुद्रा में है। चतुर्भुजी प्रतिमा का ऊपरी दाहिना हाथ कटिप्रदेश पर एवं निचले में गदा धारण किये हुए और ऊपरी बायें हाथ में शंख एवं निचला बायें हाथ में चक्र प्रदर्शित है। दायाँ पैर सीधा जमीन पर एवं बायाँ पैर ऊपर उठाये हुए दैत्यराज बलि के मस्तक पर रखते हुए प्रदर्शित किया गया है। प्रतिमा किरीट मुकुट, कान में कुण्डल, गले में ग्रैवेयक, कटिप्रदेश में कटिमेखला, हाथ में कंगन तथा घुटने तक लटकती वनमाला से सुसज्जित है। परिकर के निचले हिस्से में दोनों पार्श्वो में त्रिभंग मुद्रा में उपासिका का अंकन है। प्रतिमा के घिसी होने के कारण मुख के भाव – अस्पष्ट है। ये प्रतिमा प्रतिमाशस्त्रीय लक्षणों पर आधारि**त है**।

विष्णु की गरुड़ासीन प्रतिमा
शिल्पसंहिता में गरुड़ासीन प्रतिमा निर्माण करने की प्रावधान दिया गया है। इसमें वर्णित विवरण के अनुसार गरुड़ पर आसीन विष्णु का एक पैर गरुड़ पर एवं दूसरा पैरा लटका रहता है।[14]

प्रतिमा का नामः गरुड़ासीन विष्णु
प्राप्ति स्थलः दौनी (दमोह)
प्रदर्शन स्थलः रानी दमयंती पुरातत्त्व संग्रहालय, दमोह
पंजीयन संख्याः 186
मापः 42×177×35 से.मी.
प्रस्तरः लाल बलुआ
कालः 10 वी से 11 वी शताब्दी ईस्वी (कलचुरि काल)

छायाचित्र क्र. 3: गरुड़ासीन विष्णु

रानी दमयंती पुरातत्त्व संग्रहालय सिरदल के मध्य भाग में गरुड़ासीन विष्णु प्रतिमा को प्रदर्शित किया गया है। जिसमें भगवान विष्णु को चतुर्भुज रूप में मानवाकार गरुड़ के ऊपर बैठे हुए दिखलाया गया है। इस सिरदल में भगवान विष्णु एवं मानवकार गरुड़ को अलंकृत रूप में प्रदर्शित किया गया है। भगवान विष्णु को सुदर्शन चक्र, दण्ड, किरीट मुकुट, भुजबंध, कर्णकुण्डल एवं आभूषण आदि धारण किए हुए प्रदर्शित किया गया है। प्रतिमा में भगवान विष्णु के सिर के पीछे प्रभामण्डल को भी दिखलाया गया है। भगवान विष्णु का दांया हाथ वरद मुद्रा में है एवं बांया हाथ खण्डित अवस्था में है। भगवान विष्णु को गरुड़ के ऊपर आसनावस्था में प्रदर्शित किया है जिसमें विष्णु का दांया पैर गरुड़ के कन्धे पर है एवं बांया पैर आसन अवस्था में है जिसे गरुड़ के दांये हाथ से उठाये हुए दिखलाया गया है। प्रतिमा किरीट मुकुट, कान में कुण्डल, गले में ग्रैवेयक, कटिप्रदेश में कटिमेखला, हाथ में कंगन तथा घुटने तक लटकती वनमाला से सुसज्जित है। सिरदल में प्रतिमा के दोनों ओर मालाधरी विद्याधरों को एवं दोनों किनारों में स्थानक मुद्रा में देवी को प्रदर्शित किया गया है। प्रतिमा के दोनों ओर मालाधारी विधाधरों के ऊपर पुष्पबल्लभी को एवं नीच नागबल्लभी को प्रदर्शित किया गया है। इसके साथ–साथ सिरदल में पुष्पबल्लरी के नीचे हीरे नुमा अलंकरण को प्रदर्शित किया है। इसके अलावा सबसे नीचे ज्योमितीय अलंकरण बहुत सुन्दर प्रदर्शित किया है। ये प्रतिमा प्रतिमाशस्त्रीय लक्षणों पर आधारित **है**।

लक्ष्मी नारायण प्रतिमा
वैष्णव पुराणों में लक्ष्मीनारायण प्रतिमा बनाने का विधान मिलता है, जिसमें लक्ष्मी नारायण के बायीं ओर जंघा पर बैठी दिखाई जायेगी। कभी समीप, कभी पास खड़ी और बैठी रहती है तथा कभी विष्णु के साथ गरुड़ पर बैठी रहती है। ऐसी प्रतिमा लक्ष्मीनारायण की कहलाती है। [15] भारतीय शिल्पसंहिता में वर्णित वामांग से ललितासन योगस्थानक मुद्रा में विभिन्न अलंकरणों से युक्त द्विभुजी लक्ष्मी का दायां हाथ विष्णु स्कन्धों पर बायें हाथ से सनाल कमल तथा जब चतुर्भुजी प्रतिमा में शंक, चक्र, गदा एवं एक हाथ देवी के कमर पर होती है। [16]

प्रतिमा का नामः गरुड़ासीन लक्ष्मीनारायण
प्राप्ति स्थलः दौनी (दमोह)
प्रदर्शन स्थलः रानी दमयंती पुरातत्त्व संग्रहालय, दमोह
पंजीयन संख्याः 179
मापः 50×179×36 से.मी.
प्रस्तरः लाल बलुआ
कालः 10वी से 11वी शताब्दी ईस्वी (कलचुरि काल)

छायाचित्र क्र. 4: गरुड़ासीन लक्ष्मीनारायण

रानी दमयंती पुरातत्त्व संग्रहालय सिरदल के मध्य भाग में एक गरुड़ासीन लक्ष्मीनारायण प्रतिमा प्रदर्शित है, जिसमें भगवान विष्णु का सिर एवं दांया पैर खण्डित अवस्था में है एवं माता लक्ष्मी, भगवान विष्णु के बाएं पैर पर बैठी हुई अवस्था में प्रदर्शित है। जिनमें माता लक्ष्मी का दांया पैर भी खण्डित अवस्था में है। जिसे मानवकार गरुड़ के कन्धे एवं बाएं हाथ की हथेली पर रखे हुए प्रदर्शित किया गया है। भगवान विष्णु को चतुर्भुज रूप में प्रदर्शित किया गया है जिसमें भगवान विष्णु के दण्ड, पुष्प एवं भुजबंध प्रदर्शित है अन्य अलंकरण खण्डित हो चुके है। इस प्रतिमा को भी सप्तमातृकाओं के मध्य बताया गया है एवं सप्तमातृकाओं के नीचे विद्याधर एवं मालाधर के साथ सेविका को प्रदर्शित किया गया है। सिरदल के दोनों ओर किनारों में स्थानक देवी का अंकन किया गया है एवं सबसे नीचे नागवल्लभी को प्रदर्शित किया गया है। ये प्रतिमा प्रतिमाशस्त्रीय लक्षणों पर आधारित है।

प्रतिमा का नामः योग विष्णु
प्राप्ति स्थलः दौनी (दमोह)
प्रदर्शन स्थलः रानी दमयंती पुरातत्त्व संग्रहालय, दमोह

© 2025 आनन्द कुमार जायसवाल. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

पंजीयन संख्याः 145
मापः 51×44×28 से.मी.
प्रस्तरः लाल बलुआ
कालः 10वी से 11वी शताब्दी ईस्वी (कलचुरि काल)

छायाचित्र क्र. 5: योग विष्ण

रानी दमयंती पुरातत्त्व संग्रहालय से एक खण्डित स्तम्भ पर भी भगवान विष्णु चतुर्भुज रूप में योग मुद्रा में एक प्रतिमा प्रदर्शित है। इसमें भगवान विष्णु को पर्वत के ऊपर दिखाया गया है, जिस पर भगवान विष्णु योगासीन है। इस प्रतिमा में भगवान विष्णु को शंख, चक्र, कुण्डल, किरीट मुकुट, भुजबंध के साथ गले का हार एवं बैजंती माला भी प्रदर्शित की गई। इस प्रतिमा को रथिका के आला में स्थित जैसा दिखलाया गया है। जो दोनों ओर से स्तम्भनुमाकृति में दिखाया गया है। ऊपर एक मण्डप जैसा आकृति बनाया गया है। प्रतिमा के दांयी ओर सुन्दर अलंकरण भी किया गया है।ये प्रतिमा प्रतिमाशस्त्रीय लक्षणों पर आधारित है।

प्रतिमा का नामः ब्रह्मा, विष्णु, महेश
प्राप्ति स्थलः दौनी (दमोह)
प्रदर्शन स्थलः रानी दमयंती पुरातत्त्व संग्रहालय, दमोह
पंजीयन संख्याः 169
मापः 28×146×36 से.मी.
प्रस्तरः लाल बलुआ
कालः 10वी से 11वी शताब्दी ईस्वी (कलचुरि काल)

छायाचित्र क्र. 6: ब्रह्मा, विष्णु, महेश

रानी दमयंती पुरातत्त्व संग्रहालय में एक विष्णु सिरदल प्रदर्शित है, जिसमें सिरदल के मध्य में भगवान विष्णु को चतुर्भुज रूप में एवं उनके दांई और बांई ओर त्रिमुखी ब्रह्मा एवं शिव का अंकन किया गया है। इस प्रतिमा में तीनों देवों को चतुर्भज रूप में प्रदिर्शत किया गया है। हिन्दू धर्म में इन देवत्रयों को सर्वाधिक महत्वपूर्ण देवता माना गया है। भगवान विष्णु को वरद मुद्रा में आसनास्थ प्रदर्शित किया गया है। भगवान विष्णु को दण्ड, चक्र, शंख, किरीट मुकुट, कुण्डल, हार, बैजंतीमाला, भुजबंध एवं प्रभामण्डल से सुसज्जित दिखलाया गया है, दोनों ओर सेविकाओं को दिखलाया गया है। इस सिरदल में विष्णु प्रतिमा के दोनों ओर महेश (दायें तरफ के शिव का मुख खण्डित) का अंकन है। जिन्हें ध्यान मुद्रा में दिखलाया गया है, जो कि चतुर्भुजी प्रतिमा के रूप में है। इन्हें दोनों हाथों में सर्प, एक हाथ वरदमुद्रा में एवं एक हाथ में कमण्डल लिए हुए दिखलाया गया है। यह प्रतिमा भी प्रभामण्डल से युक्त है। दोनों ओर सेविकाओं को भी प्रदर्शित किया गया है। सिरदल में विष्णु और शिव के बिच दोनो ओर पर (मध्य में) ब्रह्म का अंकन है, जिन्हें त्रिमुखी एवं चतुर्भुजी रूप में प्रदर्शित किया गया है। जिसमें वेद, पुष्प एवं कमण्डल को हाथों में प्रदर्शित किया गया है। इस प्रतिमा को वरदमुद्रा में दिखलाया गया है, पीछे मुख भी स्पष्ट प्रदर्शित हो रहे है। अतः इस सिरदल के मध्य भाग में विष्णु एवं उनके दोनों ओर शिव और शिव के बाद दोनों ओर ब्रह्म को प्रदर्शित किया गया है। ये प्रतिमा प्रतिमाशस्त्रीय लक्षणों पर आधारित है।

निष्कर्ष

रानी दमयंती पुरातत्त्व संग्रहालय में प्रदर्शित विभिन्न प्रतिमाओं का अंकन किया गया है जिसमें विष्णु एवं उनके अवतार की प्रतिमाएं अपनी विशेष भूमिका रखती है। जिसमें सिरदलों के मध्य भाग में स्थित विष्णु प्रतिमा, लक्ष्मीनारायण प्रतिमा, ब्रह्मा एवं शिव के साथ विष्णु प्रतिमा एवं गरुड़ प्रतिमा आदि के अलग उनके अवतार स्वरूपों को प्रदर्शित किया गया है, जिन्हें दमोह के आसपास के क्षेत्रों से प्राप्त किया गया है। जिनसे दमोह जिला के पुरातात्त्विक स्वरूप (राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, स्थापत्य एवं कला आदि) की जानकारी प्राप्त होती है।

सन्दर्भ

1. छत्री, रायबहादुर, सागर संभग के संग्रहालयों में संग्रहीत देवी प्रतिमाओं का अध्ययन, अप्रकाशित, शोध प्रबंध, डा हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, 2012, पृ. 54
2. वही.
3. पाण्डेय, उमेश चन्द्र, दमोह जिले का प्राचीन स्थापत्य एवं मूर्तिशिल्प, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, 2019, पृ. 23
4. मिश्र, रमानाथ, भारतीय मूर्तिकला का इतिहास, ग्रन्थ शिल्पी, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1978, पृ.168
5. श्रीवास्तव, बृजभूषण, प्राचीन भारतीय विज्ञान एवं मूर्ति कला वराणसी, 2010, पृ.37
6. राव, टी.ए., गोपीनाथ, एलीमेंट आफ हिन्दू आइकनोग्राफी, दिल्ली, 1914. पृ. 149–151
7. गौर, चन्द्रभान सिंह, सागर जिले में प्राप्त वैष्णव प्रतिमाओं का अध्ययन, सागर प्रकाशन, 2000, पृ. 65
8. मिश्र, इन्दुमती, प्रतिमा विज्ञान, वैष्णव धर्म के आधार पर, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2009, पृ. 200
9. श्रीवास्तव, बलराम, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1996, पृ. 136
10. अग्रवाल, वी. एस. ब्रह्मानिकल, इमेजेस इन मथुरा, जर्नल ऑफ दिइण्डियन सोसायटी ऑफ ओरियन्टल, आर्ट, वॉल्यूम –5, 1937, पृ. 124
11. राव, टी. ए., गोपीनाथ, पूर्वोल्लिखित, पृ. 196
12. अवस्थी, रामाश्रय, खजुराहो की देव प्रतिमाएँ, कुँवर प्रसाद, ओरिएण्टल पब्लिशिंग हाउस आगरा,1967, पृ. 106
13. दुबे, नागेश, मोहनलाल चढ़ार, एरण की कला, सुप्रिया पब्लिकेशन, सागर,1997, पृ. 20
14. मिश्र, इन्दुमति, पूर्वोल्लिखित, पृ.148
15. मिश्र, इन्दुमति, पूर्वोल्लिखित, पृ.160
16. सोमपुरा, प्रभाशंकर, ओ. शिल्पसंहिता, सोमैया पब्लिकेशन, नयी दिल्ली, 1975. पृ.107

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 आनन्द कुमार जायसवाल. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/